

डॉ. बिल मौस, पर्वत पर उपदेश, व्याख्यान 10, मत्ती 6:1ff, धर्मपरायणता के कार्य, प्रार्थना

© 2024 बिल मौस और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. बिल मौस द्वारा माउंट पर उपदेश देते हुए दिया गया उपदेश है। यह मैथ्यू 6:1 और उसके बाद के सत्र 10 का पाठ है, धर्मपरायणता के कार्य, प्रार्थना।

अरे, प्रार्थना पर आगे बढ़ने से पहले, मैं बस यह सुनिश्चित करना चाहता हूँ क्योंकि हो सकता है कि मैंने कुछ स्पष्ट रूप से नहीं कहा हो।

मुझे लगता है कि इनाम है अच्छा काम करने वाला, अच्छा और वफादार सेवक। अगर मैंने पिछले सत्र में यह स्पष्ट नहीं किया था, तो मैं इसे स्पष्ट करना चाहता हूँ। यही वह इनाम है जिसकी मुझे तलाश है।

स्वर्ग में लोग मुझे धन्यवाद देंगे, यह बहुत अच्छा होगा। मैं इसका बेसब्री से इंतजार कर रहा हूँ। यह जानकर खुशी होती है कि हम दुनिया भर के लोगों को मुफ्त, विश्व स्तरीय शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, और इनाम यह है कि बीटी के साथ ऐसा करने का आनंद मिलता है।

मेरे लिए सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण इनाम यह है कि मैं भगवान से यह सुनूँ कि, अच्छा किया। मैं यह नहीं सुनना चाहता कि, अच्छा, तुमने ठीक किया। मैं ऐसा बिल्कुल नहीं चाहता।

मेरा मतलब है, मैं इसे स्वीकार कर लूंगा, लेकिन यह वह नहीं है जो मैं सुनना चाहता हूँ। मैं सुनना चाहता हूँ कि आपने अच्छा काम किया। मुझे गले लगाओ।

मुझे चित्र चाहिए। तो वैसे भी, अगर मैंने यह स्पष्ट नहीं किया है, तो मैं इसे स्पष्ट करना चाहता हूँ। ठीक है, हम श्लोक 5 तक जा रहे हैं। ओह, हाँ, धन्यवाद।

उपवास पर टिप्पणियाँ। अब आप उपवास कर सकते हैं। हाँ।

मेरा मतलब है, हाँ। मेरा मतलब है, उपभोक्तावाद से उपवास। मेरा मतलब है, क्या यह उस श्रेणी में फिट होगा जो मैंने कहा? हाँ।

उपभोक्तावाद से उपवास। मुझे खेद है। खैर, निश्चित रूप से, अगर हम कॉफी पीना बंद कर दें, अगर हम कॉफी से उपवास करें और बहुत अधिक कॉफी पीएं तो होल फूड्स के कॉफी बार में समस्याएँ होंगी।

हाँ। और इसलिए, नहीं, मैं इससे परिचित नहीं हूँ। ओह, मुझे नहीं पता, मुझे नहीं पता, मुझे नहीं पता।

मैं कहता हूँ 50. यह है. यह क्या है? 58.

लोगों ने कहा कि हमने उपवास किया, और मैंने इसे देखा है। और भगवान कहते हैं, हाँ, मैं तुम्हें बताता हूँ, अगर तुम उपवास कर रहे हो, तो तुम जो चाहो करो। तुम सभी मज़दूरों का शोषण करते हो।

आप कानून के खिलाफ़ उपवास करते हैं। और इसी तरह की अन्य बातें। मैंने इस तरह का उपवास नहीं चुना है।

यह शर्म की बात है और अन्याय है, हाँ ... हाँ... ठीक है।

मैं, मुझे सोचना होगा कि मैं, यशायाह 15. मुझे इसके बारे में सोचना चाहिए। मैं अभी ऐसा नहीं कर सकता, लेकिन यह वास्तव में विस्तार कर रहा है कि उपवास क्या है।

और यह बहुत ज़्यादा है, और इसमें अन्याय और इस तरह की अन्य चीज़ों के विचार शामिल हैं। हाँ। मुझे इस पर विचार करने दीजिए।

अच्छी बात है। धन्यवाद। मुझे इस विषय पर यशायाह 58 के बारे में जानकारी नहीं थी।

ठीक है। प्रार्थना पर वापस आते हैं। धन्यवाद।

और जब तुम प्रार्थना करो, क्षमा करें, पांचवीं आयत, और जब तुम प्रार्थना करो, तो कपटियों की तरह मत बनो, क्योंकि वे आराधनालयों में और सड़क के कोनों पर खड़े होकर प्रार्थना करना पसंद करते हैं ताकि दूसरे उन्हें देख सकें। खैर, मैं तुमसे सच कहता हूँ, उन्हें पूरा इनाम मिला है। लेकिन जब तुम प्रार्थना करो, तो अपने कमरे में जाओ, और किंग जेम्स के पास एक आंतरिक कमरा है।

यह एक ग्रीक पांडुलिपि मुद्दा है। एक अक्षर को छोड़कर दोनों शब्द समान हैं। और इसलिए, ग्रीक शब्द, किंग जेम्स, अपने आंतरिक कमरे का उपयोग कर रहा है।

कमरा, जिस यूनानी शब्द का हममें से ज़्यादातर लोग अनुसरण करते हैं, उसका मतलब सिर्फ़ कमरा है, अपने कमरे में जाओ, दरवाज़ा बंद करो, और अपने पिता से प्रार्थना करो जो अदृश्य है। और फिर तुम्हारा पिता, जो गुप्त में किए गए कामों को देखता है, तुम्हें पुरस्कृत करेगा। चलो, चलो, हम छठी आयत पर रुकते हैं।

यीशु क्या नहीं सिखा रहे हैं? खैर, वे सार्वजनिक प्रार्थना पर रोक नहीं लगा रहे हैं। ऐसा लगता है, लेकिन संदर्भ के हिसाब से ऐसा नहीं है। शिष्य कहते हैं, हमें प्रार्थना करना सिखाओ।

वह कहते हैं, हमारे पिता, जो एक सामूहिक प्रार्थना है। यीशु, पॉल और अन्य चर्च सभी ने बहुत सार्वजनिक रूप से प्रार्थना की। इसलिए यह मुद्दा नहीं हो सकता।

और मुझे नहीं लगता कि मुद्दा इतना ज़्यादा है कि आप फिर से कहाँ प्रार्थना करते हैं। यीशु ने कई अलग-अलग जगहों पर प्रार्थना की। प्राचीन घर खुले होते थे।

पर्दे तो थे, लेकिन वे मूलतः खुले थे। हो सकता है कि एक कमरा हो जिसमें एक दरवाज़ा हो और वह गोदाम हो। लेकिन मूलतः वे थे; वे पूरी तरह खुले थे।

इस तरह, आंतरिक कमरे और कमरे के बीच इतना अंतर नहीं है क्योंकि शायद केवल एक ही है। हाँ, ठीक है, हाँ, यह, हाँ, यह, यह वह नहीं है जो वह कह रहा है। अब, क्या प्रार्थना कक्ष की अवधारणा एक अच्छी बात है? हाँ, यह एक बहुत अच्छी बात है।

लेकिन मुझे नहीं लगता कि ऐसा हो रहा है। मुझे लगता है कि यह मुद्दा धर्मपरायणता के अन्य कृत्यों के अनुरूप है। आप क्यों प्रार्थना करते हैं, और किससे? आपके श्रोता कौन हैं? आप किसकी प्रशंसा चाहते हैं? तो, वह एक विशिष्ट ऐतिहासिक श्रोता से बात कर रहे हैं।

वह इस अविश्वसनीय अहंकार का प्रतिकार करने की कोशिश कर रहा है। मेरा मतलब है, तस्वीर यह है कि प्रार्थना के लिए कुछ निश्चित समय थे, प्रार्थना के लिए आह्वान, है न? और इसलिए विचार यह है कि फरीसी यह सुनिश्चित करेंगे कि जब वे प्रार्थना के लिए समय की घोषणा करने के लिए इतने दूर हों तो वे किसी व्यस्त सड़क के कोने पर हों। इसलिए, वे किसी व्यस्त सड़क के कोने पर हो सकते हैं ताकि हर कोई देख सके कि उनकी प्रार्थनाएँ कितनी वाक्पटु हो सकती हैं।

हाँ, मेरे पास यह मेरे नोट्स में नहीं है, मैं इसे ठीक से नहीं लिख सकता, लेकिन बोस्टन के एक उपदेशक के बारे में एक प्रसिद्ध उद्धरण है जिसने कहा कि यह मनुष्य के लिए अब तक की सबसे भावपूर्ण प्रार्थना थी। और यह केवल पुरुषों के लिए ही कही गई थी। यीशु क्या सिखा रहे हैं? मुख्य बात, जाहिर है, यह है कि हम अपनी प्रार्थनाओं में पाखंडी नहीं हो सकते।

हम अपनी प्रार्थनाओं में पाखंडी नहीं हो सकते। पाखंडी प्रार्थना वह है जो प्रार्थना करते समय भूल जाता है कि वह किससे प्रार्थना कर रहा है, अर्थहीन शब्दों और रूढ़िवादिता का प्रयोग करता है, ऐसे शब्दों का प्रयोग करता है जो प्रार्थना की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। जब मैं सुनता हूँ कि उपदेशक प्रार्थना करने के लिए उपदेशक की आवाज़ में बदल जाते हैं, तो मुझे गुस्सा आता है।

प्रिय प्रभु! आज हम मत्ती 5 को देखने जा रहे हैं। प्रिय प्रभु! धन्यवाद। प्रार्थना का उद्देश्य हमारी ओर ध्यान आकर्षित करना नहीं है, और इसका प्रभाव हमारे व्यवहार और प्रार्थना करने के तरीके पर पड़ना चाहिए। सीधे शब्दों में कहें तो सच्ची प्रार्थना ईश्वर से बात करना है।

पाखंडी प्रार्थना नहीं, जो मनुष्य को संबोधित की जाती है, बल्कि प्रामाणिक प्रार्थना, जो ईश्वर से बात करने वाली प्रार्थना है। मेरे लिए अपने फ़ोन पर पुराने नियम तक पहुँचना आसान है। माफ़ करें, बस एक सेकंड।

भजन 27.8 वह जगह है जहाँ मैं जा रहा हूँ। बाइबल अभ्यास। मेरा दिल कहता है, अगर तुम उसका चेहरा खोजोगे, तो तुम्हारा चेहरा, हे प्रभु, मैं खोजूँगा।

यही प्रार्थना है, है न? यही सही तरह की प्रार्थना है। प्रार्थना ईश्वर से बात करना है। यह सुनने वाले इंसानी श्रोताओं से बात नहीं करती बल्कि ईश्वर से बात करती है जो सुन रहा है।

मुझे लगता है कि पाखंडी सार्वजनिक प्रार्थना का सबसे अच्छा सुधार प्रामाणिक निजी प्रार्थना है। मुझे लगता है कि यह झगड़े की रेखा है। मुझे यकीन नहीं है।

मुझे लगता है कि पाखंडी सार्वजनिक प्रार्थना का सबसे अच्छा सुधार प्रामाणिक निजी प्रार्थना है। और सार्वजनिक प्रार्थना हमारे निजी प्रार्थना जीवन का एक परिणाम होना चाहिए। आप, और जब मैं करता था, रविवार की सुबह उठकर प्रार्थना करते थे।

क्या यह प्रार्थना पिछले सप्ताह के दौरान परमेश्वर के साथ हमारी चर्चाओं का स्वाभाविक विस्तार है? मुझे लगता है कि यह हमारी आत्मा में उन जाँचों में से एक है जो हमें करनी चाहिए। मुझे नहीं पता कि आप अपने उपदेशों की तैयारी कैसे करते हैं। जैसा कि मैंने कहा, मैं चर्च में जाता था, और मैंने पाया कि निजी प्रार्थना कक्षाओं की बात करें तो मेरी पत्नी के पास एक कोठरी है, और वह वहाँ बहुत समय बिताती है।

जमीन पर मुंह करके प्रार्थना कर रही थी। वह एक महान प्रार्थना है। मेरे लिए, मुझे पूजा केंद्र में प्रार्थना करना बहुत पसंद था।

यह कोई पवित्र स्थान नहीं है; यह पुराना नियम है। आराधना केंद्र में प्रार्थना करना। मुझे शुक्रवार को प्रार्थना करने की दिनचर्या शुरू करना बहुत पसंद था जो शनिवार तक चलती थी, ताकि जब मैं रविवार को प्रार्थना केंद्र में लोगों के साथ खड़ा होता, तो यह पिछले कई दिनों से उस कमरे में हो रही बातों का स्वाभाविक प्रवाह होता।

हर किसी के पास ऐसा करने के अलग-अलग तरीके हैं, है न? लेकिन मेरे लिए, यह सुनिश्चित करने का एक बहुत ही मददगार तरीका था कि मेरी सार्वजनिक प्रार्थनाएँ मेरी निजी प्रार्थनाओं का ही एक प्रवाह थीं जो मैं पिछले सप्ताह कर रहा था। और अगर हमारी प्रार्थनाएँ पाखंडी नहीं हैं, और अगर हमारी प्रार्थनाएँ वास्तव में प्रामाणिक हैं, वे ईश्वर के लिए हैं, तो इसका एक इनाम है, है न? ऐसा ही कहा गया है। तुम्हारा पिता, जो गुप्त रूप से किए गए कार्यों को देखता है, तुम्हें इनाम देगा।

और, जैसा कि आप उम्मीद कर सकते हैं, मैं इस बारे में कहाँ जा रहा हूँ, जैसे देना और उपवास करना, प्रक्रिया का अंत पुरस्कार है। प्रार्थना का सबसे बड़ा पुरस्कार ईश्वर के साथ संवाद है। बस लगातार बढ़ते तरीकों से, और मैं किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में नहीं बोल रहा हूँ जो इस पर नियंत्रण रखता है, इसलिए मुझे गलत न समझें, लेकिन प्रार्थना का पुरस्कार स्वर्गीय पिता के साथ संबंध और संवाद में रहने के बारे में हमारी बढ़ती जागरूकता में है।

और क्या है? यह प्रक्रिया का अंत है, जो वास्तव में पुरस्कार है। अब, प्रार्थना के लिए एक और पुरस्कार है, और वह है प्रार्थना का उत्तर। और निश्चित रूप से, जब हम प्रार्थना करते हैं और जब

परमेश्वर इस तरह से उत्तर देता है कि हम उसकी क्रियाओं को अपनी प्रार्थनाओं के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में देख सकते हैं।

मेरी पत्नी की मशहूर लाइन कुछ ऐसी है। मुझे याद नहीं कि वह किस बारे में थी, लेकिन यह कुछ ऐसा था जिसके लिए वह प्रार्थना कर रही थी, और भगवान ने उसे पूरा किया। और उसने मेरी तरफ देखा, और कहा, प्रार्थना काम करती है। तुम्हें बस इसे करना है, बिल।

जब हम अपने मंत्रालय के काबूम से गुज़रे, तो उसने कहा, मैं बस प्रार्थना नहीं कर सकता। मैं क्रोधित था, मैं गड़बड़ था, मैं बस, मैं प्रार्थना नहीं कर सकता था। और वह धीरे-धीरे मुझे पोषित कर रही थी और मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रही थी, और इसीलिए वह कहती थी, प्रार्थना काम करती है, बिल।

तुम्हें बस यही करना है। उसने मेरी पिछली प्रार्थना का उत्तर नहीं दिया, इसलिए मैं अब और प्रार्थना नहीं करूँगा। उसने किसी भी प्रार्थना का उत्तर नहीं दिया।

वह करता है, बिल। हो सकता है कि आपको उसका उत्तर पसंद न आए। हाँ, मुझे लगता है कि अनुत्तरित प्रार्थना का पूरा मुद्दा एक बहुत बड़ी समस्या है, और हमारे समय आवंटन के आधार पर, उम्मीद है कि हम इसके बारे में थोड़ी बात कर सकते हैं।

तो वैसे भी, यह प्रार्थना पर एक तरह का हिस्सा है जो देने और उपवास पर भाग के समानांतर है। लेकिन फिर यीशु आगे बढ़ता है, श्लोक 7। मेरे नोट्स में शीर्षक श्लोक 7 और 8 है, जो प्रार्थना और परमेश्वर के चरित्र हैं। मैं जो बात कहना चाहता हूँ, वह यह है कि हम कैसे प्रार्थना करते हैं, जो परमेश्वर के चरित्र के बारे में हमारा दृष्टिकोण दर्शाता है।

किसी ने मुझे एक बार यह बात कही थी, और यह सबसे ज़्यादा परेशान करने वाली बातों में से एक थी। जब मैं अपनी प्रार्थनाएँ सुनता हूँ, तो यह परेशान करने वाली बात होती है। और इसलिए, अगर दुख को साथी चाहिए, तो मैं चाहता हूँ कि आप भी उतने ही दुखी हों, जितने मैं उस प्रक्रिया में था।

आपकी प्रार्थनाएँ और मेरी प्रार्थनाएँ वास्तव में ईश्वर के बारे में हमारा दृष्टिकोण दर्शाती हैं। और यह एक डरावनी, डरावनी बात है। जब मैं बैठकर भोजन करते हुए प्रार्थना करता हूँ या जब मैं बच्चों के सोने से पहले उनके लिए प्रार्थना करता हूँ।

तो, प्रार्थना और परमेश्वर का चरित्र। जब आप प्रार्थना करते हैं, तो मूर्तिपूजकों की तरह बड़बड़ाते न रहें, क्योंकि वे सोचेंगे कि उनके बहुत से शब्दों के कारण उनकी सुनी जाएगी। उनके जैसे मत बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे माँगने से पहले ही जानता है कि तुम्हें क्या चाहिए।

इसलिए, निरर्थक शब्दों के साथ बड़बड़ाने के बजाय, मैं आपको बताता हूँ कि प्रार्थना कैसे करनी चाहिए। गैर-यहूदियों, प्रभु की प्रार्थना में जाने से पहले बस कुछ बातें। गैर-यहूदियों, या एनआईवी, इसका अनुवाद बुतपरस्त के रूप में करता है।

हाँ, बुतपरस्त। ESV इसका अनुवाद कैसे करता है? वे कहते हैं गैर-यहूदी, हाँ, ठीक है। हाँ, समस्या यह है कि, निश्चित रूप से, यीशु गैर-ईसाई यहूदियों को इस चेतावनी से बाहर नहीं रखना चाहता है।

इसीलिए NIV ने मूर्तिपूजकों को चुना। ये वे लोग हैं जो परिवार से बाहर हैं, समुदाय से बाहर हैं। इसलिए, गैर-यहूदियों और मूर्तिपूजकों में निश्चित रूप से पाखंडी यहूदी शामिल हैं।

और सवाल यह है कि क्या परमेश्वर के बारे में हमारा दृष्टिकोण हमें निरर्थक वाक्यों का ढेर लगाने, बकबक करते रहने के लिए प्रेरित करता है? वास्तव में, किंग जेम्स यहाँ बहुत अच्छा है। यह व्यर्थ दोहराव के बारे में बात करता है। यहाँ यह शब्द, जिसका अनुवाद बकबक करना है, एक आकर्षक शब्द है क्योंकि यीशु ने इसे बनाया था।

अंग्रेजी में, हम शब्द बनाने में बहुत सहज नहीं होते। जर्मन लोग हर जगह शब्द बनाते हैं। मेरा मतलब है, वे बस शब्द बनाते हैं।

मिश्रित शब्द एक साथ चलते हैं, और वे बस उन्हें कहते हैं और आगे बढ़ते हैं। ग्रीक में भी कुछ हद तक यही रवैया है कि यह शब्दों को बनाने में सहज है। यीशु ने जो किया वह ग्रीक शब्द *batalogeo* का उपयोग करना था।

और लोगियो का मतलब है कुछ कहना या बोलना। और बाटा का मतलब है बा -दा-दा-दा-दा-दा-दा-दा-दा। यह एक ओनोमेटोपोएटिक शब्द है।

यह एक ऐसा शब्द है जिसकी ध्वनि उसके अर्थ को इंगित करती है। इसलिए, उन्होंने यह शब्द गढ़ा: बस ब्ला-ब्ला-ब्ला-ब्ला-ब्ला-ब्ला-ब्ला-ब्ला पर मत रहो। मुझे बुतपरस्त पसंद हैं।

या फिर उन्हें लगता है कि उनके बहुत सारे शब्दों की वजह से उनकी बात सुनी जाएगी। ब्ला-ब्ला-ब्ला-ब्ला का अनुवाद करने का कोई तरीका नहीं है। हम इसे हाथ की हरकतों से कर सकते हैं, लेकिन आप इसे टेक्स्ट पर नहीं कर सकते।

आप जानते हैं, ऐसा मत करो। मेरा डॉक्टरेट शोध प्रबंध ग्रीक धर्मों और ईसाई धर्म की तुलना पर था, और एक बात जो मुझे पता चली वह यह थी कि यह एक बहुत प्रसिद्ध मार्ग है, और हम इसका अनुवाद कभी नहीं कर पाए। यह लगभग 200 शब्दों का है, और यह एक ऐसा मंत्र है जिसे रहस्यमय धर्म के लोगों ने याद किया होगा क्योंकि उनका मानना है कि जब वे मरते हैं, तो वे संकेंद्रित स्वर्गों की एक श्रृंखला से ऊपर जाना शुरू करते हैं, और प्रत्येक स्वर्ग में, आपको खाने के लिए राक्षस इंतजार कर रहे होते हैं।

और इसलिए, धर्म में अंधविश्वास सीखना, जादू-टोना करना और ऐसे मंत्रों का इस्तेमाल करना शामिल है जो उन राक्षसों को हरा देंगे जो मृत्यु के बाद आपको खाना चाहते हैं। और ये 200-300 शब्द इन प्रमुख मंत्रों में से एक हैं। क्या आप उस तरह के डर में जीने की कल्पना कर सकते हैं? और उन्हें आखिरकार एहसास हुआ कि ये 200-300 शब्द शब्द नहीं थे।

ब्ला, ब्ला, ब्ला, ब्ला, ब्ला, ब्ला, ब्ला, ब्ला, ब्ला, ब्ला, ब्ला, ब्ला, ब्ला, ब्ला, ब्ला। बस यही था। इसीलिए कोई भी कभी अनुवाद नहीं कर सका क्योंकि वे शब्द नहीं थे।

यह मंत्रोच्चार था, देवताओं के नाम लेने की कोशिश करना और बस ब्ला, ब्ला, ब्ला, और किसी तरह यह उन्हें विनाश से बचाएगा। यही वह दुनिया थी जिसमें सुसमाचार आया था। और यीशु कहते हैं कि इनमें से कुछ लोगों की प्रार्थनाएँ वास्तव में ब्ला, ब्ला, ब्ला से बहुत दूर नहीं हैं।

यीशु कहते हैं, ऐसा मत सोचो, तुम जानते हो, उन्हें लगता है कि उनके बहुत से शब्दों के कारण उनकी बात सुनी जाएगी। मुझे नहीं लगता कि मुद्दा वास्तव में प्रार्थना की लंबाई का है। यह बहुत दिलचस्प है कि प्रार्थनाएँ कितनी छोटी हैं, है न? यह एक बहुत छोटी प्रार्थना है।

और फिर भी यीशु ने पूरी रात प्रार्थना में बिताई। यूहन्ना 17 एक लंबी प्रार्थना है। इसलिए, मुझे यकीन नहीं है कि वास्तव में यही मुद्दा है, न कि केवल शब्दों की लंबाई।

और अध्याय 7 में, अगले अध्याय में, श्लोक 7 और 8 में, यह कहा जाएगा, ढूँढ़ो, खटखटाओ। दूसरी क्रिया क्या है? माफ़ करें। पूछो।

मांगो, खोजो और खटखटाओ। तो, यह दोहराव जैसा लगता है। आपके पास लूका 18, लगातार विधवा, एक संकेत के रूप में है कि हमें प्रार्थना में कैसे लगातार बने रहना चाहिए।

तो फिर, मुख्य मुद्दा यह नहीं है कि कितने शब्द हैं। मुद्दा यह है कि अर्थहीन शब्दों को बार-बार दोहराया जाता है। यीशु इसी बात से निपट रहे हैं।

जब लोग अर्थहीन शब्दों की प्रार्थना करते हैं और उन्हें बार-बार दोहराते हैं, तो मुझे लगता है कि हमारे पास 711 गाने हैं, और हमारे पास 711 प्रार्थनाएँ हैं, है न? सात शब्द बार-बार कहे गए। और यही मुद्दा है। आप किससे प्रार्थना कर रहे हैं? आपकी प्रार्थना किस तरह से ईश्वर के बारे में आपकी समझ को दर्शाती है? और क्या आपको लगता है कि आप ईश्वर को उस तरह के ईश्वर को देखने के लिए मजबूर कर सकते हैं? मैं ऐसे ईश्वर को देखता हूँ जिसे आप बार-बार दोहराए गए कई शब्दों का उपयोग करके मजबूर कर सकते हैं।

और चर्च के इतिहास में सबसे बड़ी विडंबनाओं में से एक में, यीशु हमें अर्थहीन शब्दों की अंतहीन पुनरावृत्ति से निपटने के लिए एक प्रार्थना देते हैं। और फिर भी यह खुद, इतने सारे लोगों के अनुभव में, अर्थहीन शब्दों का एक निरंतर दोहराया जाने वाला समूह बन गया है, है न? मेरा मतलब है, इतने सारे लोगों के लिए, इतने सारे लोगों के जीवन में, प्रभु की प्रार्थनाओं के बारे में एकमात्र सवाल यह है कि क्या मुझे ऋण या अपराध कहना चाहिए? और मुझे विश्वास है कि अधिकांश लोग, जब वे अर्थहीन रूप से प्रभु की प्रार्थना दोहराते हैं, तो न केवल वे पाप कर रहे होते हैं क्योंकि वे पाठ की स्पष्ट शिक्षा का उल्लंघन कर रहे होते हैं, बल्कि वे उसी प्रक्रिया में ईश्वर के बारे में एक बहुत ही दोषपूर्ण दृष्टिकोण दिखा रहे होते हैं। यदि आपके पास व्यर्थ दोहराव है, यदि यह सिर्फ एक ही बात है, अर्थहीन शब्द, बार-बार, तो हम जो कह रहे हैं वह यह है कि हमें विश्वास नहीं है कि आप हमारी परवाह करते हैं।

हमें विश्वास नहीं है कि तुम हम पर नज़र रखोगे। यह एक छोटे बच्चे की तरह है। ओह, प्लीज़, डैडी, प्लीज़, प्लीज़, चलो, डैडी, प्लीज़, प्लीज़, प्लीज़, चलो, और बस, क्या आपके पास कभी ऐसा बच्चा है? मैं तुम्हें अकेला नहीं छोड़ूँगा।

मुझे नहीं पता, लेकिन मैंने उसके बारे में सुना है। खैर, यही वह चीज़ है जिससे यीशु प्रार्थनाओं में दूर रहने की कोशिश कर रहा है। तो, वह जानता है कि हम क्या चाहते हैं, और फिर भी हमें उससे पूछना चाहिए, है न? क्योंकि वह जानता है कि हम क्या चाहते हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि हमें नहीं पूछना चाहिए।

लेकिन हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि व्यर्थ की बातें दोहराने से वह किसी काम को करने के लिए मजबूर हो जाएगा। वह ऐसा नहीं है। इसलिए, यह मंच तैयार करता है।

क्या आप इस पर कोई टिप्पणी करना चाहेंगे? हाँ, सर। हाँ, मुझे लगता है, मेरा मतलब है, मैं कुछ समय के लिए एक परामर्शदाता से मिला, और उसने मुझे कई परीक्षणों से गुज़ारा, और उसका एक जवाब था, आपको लगता है कि शब्द महत्वपूर्ण हैं। और मैंने उसकी ओर देखा, और मैंने कहा, आपको मुझे स्पष्ट बताने के लिए प्रति घंटे 150 डॉलर का भुगतान किया जा रहा है? और वह हँसा, और उसने कहा, ओह, आप समझ नहीं रहे हैं, बिल, ज़्यादातर लोगों के लिए, शब्द महत्वपूर्ण नहीं हैं।

संचार शब्दों से नहीं होता, यह दूसरे तरीकों से होता है। और मैं अभी भी इस बात को समझ नहीं पा रहा हूँ। लेकिन जब मैं एक ही शब्द को बार-बार दोहराता हुआ सुनता हूँ, तो वे कम और कम अर्थ देते हैं।

तो, मेरी एक बुरी आदत यह है कि जब मैं चर्च में होता हूँ, तो तीसरी बार जब आराधना नेता वही पाँच शब्द बोलता है, तो मैं बस रुक जाता हूँ। और मैं सुनता हूँ, और चर्च के गायन की पूरी आवाज़ कम होती जाती है और कम होती जाती है क्योंकि जितना ज़्यादा आप वही शब्द बोलते हैं, उतने ही ज़्यादा शब्द, उन शब्दों का उतना ही कम अर्थ होता है। दिन के अंत तक, यह सिर्फ़ आराधना नेता का गायन रह जाता है।

और कई बार, जाहिर है, उसे इस बात का अहसास ही नहीं होता कि कोई और नहीं गा रहा है। यह सिर्फ़ व्यर्थ दोहराव है जो शब्दों की शक्ति को नष्ट कर देता है। और हम शब्दों का इस्तेमाल मुख्य रूप से संवाद करने के लिए करते हैं, और भगवान सुनना चाहते हैं।

वह नहीं चाहता कि हम यह सोचें कि उसे कई शब्दों से मजबूर किया जा सकता है क्योंकि जितना ज़्यादा हम कुछ कहेंगे, उसका उतना ही कम मतलब होगा। वैसे भी, मैं अपनी पत्नी से कुछ कहूँगा, या वह मेरे चेहरे पर भाव देखेगी। और वह बस यही कहती है, बंद करो।

इसे बंद करो। क्योंकि वह जानती है कि मैं क्या सोच रहा हूँ। खैर, प्रभु की प्रार्थना।

हमें इसी तरह प्रार्थना करनी चाहिए। तो, हमें इसी तरह प्रार्थना करनी चाहिए। मुझे लगता है कि यह शो वाकई महत्वपूर्ण है।

तरीका, और मुझे इसे स्पष्ट करना होगा, लेकिन मैथ्यू जिस तरह से इसे प्रस्तुत कर रहा है वह इसे आगे बढ़ाते रहना है। मैथ्यू जिस तरह से इसे प्रस्तुत करता है वह यह है कि ये शब्द दोहराए जाने वाले नहीं हैं। यह एक पैटर्न है जिसका अनुकरण किया जाना चाहिए। ठीक है? आपको कैसे प्रार्थना करनी चाहिए।

अब, लूका में कहा गया है, यह प्रार्थना करो। तो, प्रभु की प्रार्थना करने में कुछ भी गलत नहीं है। मैं हमेशा लोगों को इसे याद करने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ।

नए विश्वासियों के पाठ्यक्रम में, मैंने लिखा कि एक पाठ प्रार्थना के बारे में है। मैंने कहा, प्रभु की प्रार्थना को याद करो। इसे याद करना अच्छी बात है।

इसलिए, मुझे प्रभु की प्रार्थना को याद करने में कोई समस्या नहीं है, लेकिन मैथ्यू में यीशु जो सिखा रहे हैं उसका मुख्य उद्देश्य यही नहीं है। मैथ्यू में, हमें एक पैटर्न दिया जा रहा है। और इसलिए, जबकि प्रार्थना के शब्द महत्वपूर्ण हैं, जो वास्तव में महत्वपूर्ण है वह है प्रार्थना के विषय और संरचना।

बस आपको बता दें कि जब मैं अंत तक पहुँचता हूँ, तो हम इसे कक्षा में करेंगे, लेकिन मेरा हमेशा से प्रोत्साहन सभी को अपनी आँखें बंद करके प्रभु की प्रार्थना की संरचना के माध्यम से प्रार्थना करने के लिए था। और मुझे अभी भी लगता है कि यह सबसे प्रभावी सामूहिक प्रार्थना है। यीशु मैथ्यू में बात को स्पष्ट कर रहे हैं, जरूरी नहीं कि केवल शब्दों से बल्कि विषयों, संरचना और चीजों के क्रम से भी।

तो, बुनियादी बातें क्या हैं? सबसे पहले, हमें खुद को स्वर्ग में रहने वाले अपने पिता परमेश्वर की ओर उन्मुख करना है। शुरूआती वाक्य का पूरा उद्देश्य खुद को उन्मुख करना है। हम किससे प्रार्थना कर रहे हैं? वह हमारा पिता है, लेकिन वह हमारा सांसारिक पिता नहीं है।

वह हमारा स्वर्गीय पिता है। हम वापस आकर विवरण देखेंगे, लेकिन आप खुद को याद दिलाकर खुद को उन्मुख करें कि परमेश्वर अपनी निकटता और अपनी उत्कृष्टता में कौन है। और फिर दूसरा भाग परमेश्वर की स्तुति है, है न? बाइबिल की वह प्रार्थना हमेशा परमेश्वर की स्तुति से शुरू होती है।

और प्रशंसा का मतलब है यह बताना कि वह कौन है और उसने क्या किया है, है न? प्रशंसा की यही मेरी पसंदीदा परिभाषा है। हम सहज रूप से जानते हैं कि प्रशंसा कैसे करनी है, लेकिन हम अक्सर भगवान के साथ ऐसा नहीं करते हैं। बस किसी को माइकल जॉर्डन की उड़ती हुई और फिर डुबकी लगाने वाली क्लिप दिखाइए।

मेरा मतलब है, हम प्रशंसा करना जानते हैं। और प्रशंसा इस बात की घोषणा है कि माइकल जॉर्डन कौन है और माइकल जॉर्डन ने अभी क्या किया है। इसलिए, हम सहज रूप से इसे समझते हैं।

और यही परमेश्वर की स्तुति है। यह इस बात की घोषणा है कि वह कौन है और उसने क्या किया है। अंत में, यह प्रार्थना में बदल जाता है।

और जैसा कि मैं और विस्तार से बताने जा रहा हूँ, मुझे नहीं लगता कि याचिका इतनी बड़ी है, ठीक है, अब यह सब मेरे बारे में है। मुझे लगता है कि याचिका, ध्यान अभी भी भगवान पर है, और हमें सभी चीजों के लिए उस पर अपनी निर्भरता को स्वीकार करने का अवसर दिया गया है। क्षमा के लिए निर्भरता, शारीरिक पोषण के लिए निर्भरता, और आध्यात्मिक सुरक्षा के लिए उस पर निर्भरता।

इसलिए, प्रार्थना कभी भी हम पर केंद्रित नहीं होती। यह हमेशा परमेश्वर पर केंद्रित होती है। पहले ध्यान लगाओ, फिर स्तुति करो, फिर प्रार्थना करो।

और मैंने सुना है कि कुछ लोगों के पास शब्दों के दूसरे सेट होते हैं। किसी ने मुझे दूसरे दिन यह बताया। आराधना पहला खंड होगा।

वैसे भी, अलग-अलग लोग अलग-अलग शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। ठीक है, ठीक है। आराधना, स्वीकारोक्ति।

कबूलनामा क्या है? ठीक है, तो कबूलनामा होगा, हमें हमारे कर्ज माफ कर दो। हाँ, मैं, हाँ। हाँ, ठीक है, ठीक है, हाँ, हाँ।

ठीक है, ठीक है। तो, चलिए शुरू करते हैं। तो, यह मेरा है, मैं इस पर दृष्टिकोण करने जा रहा हूँ, ठीक है।

ठीक है, चलो अपना रास्ता बनाना शुरू करते हैं। मैं प्रार्थना में खुद को उन्मुख करके शुरू करूँगा। स्वर्ग में हमारे पिता।

तो, हमारा बहुवचन है। यह सामूहिक प्रार्थना है। जाहिर है, व्यक्तिगत प्रार्थना गलत नहीं है।

आप प्रभु की प्रार्थना करते हैं, लेकिन शायद अकेले में। आपको हमारा नहीं कहना चाहिए, बल्कि मेरा कहना चाहिए। अन्यथा, यह एक अर्थहीन शब्द है, है न? आप मेरे पिता हैं जो स्वर्ग में हैं। आप देख सकते हैं कि आप अपने प्रार्थना वस्त्र में हैं।

जब आप अकेले होते हैं तो यह मेरे पिता होते हैं। लेकिन यह एक सामूहिक प्रार्थना है। हमारा, और फिर पिता।

यह ईश्वर की निकटता का सिद्धांत है। आप लोगों ने अपने पढ़ने में इस शब्द को पढ़ा है? IMMANENCE। निकटता ईश्वर की निकटता और पहुंच की क्षमता का सिद्धांत है, कि वह हमारा पिता है, कि वह हमारा अब्बा है।

ठीक है, क्योंकि यीशु अरामी भाषा में बोल रहे हैं, और कौन जानता है कि वे किस भाषा में बोल रहे हैं। लेकिन अगर वे अरामी भाषा में बोल रहे हैं, तो यह अब्बा है, यह स्नेह का शब्द है जिसका उपयोग केवल आपके परिवार के संदर्भ में किया जाता है। लेकिन जब हम कहते हैं हमारे पिता, तो हम यह कह रहे हैं कि आप हमारी परवाह करते हैं, आप सुलभ हैं, आप अपनी रचना में शामिल हैं, आपको अपनी रचना से गहरा प्यार और रुचि है, आपको मुझसे गहरा प्यार और रुचि है।

और जैसा कि हम जानते हैं, ईश्वर के बारे में बात करने का यह एक क्रांतिकारी तरीका था। यहूदी कभी भी ईश्वर को अपने व्यक्तिगत पिता के रूप में नहीं बोलेंगे। वह शायद राष्ट्र का पिता था, शायद दाऊद का पिता, मसीहाई राजा।

लेकिन आप अपनी प्रार्थना कोठरी में कभी भी ईश्वर को ऐसे पारिवारिक शब्दों से संबोधित नहीं करेंगे। प्रार्थना की यहूदी आदत थी कि वे उसकी उत्कृष्टता पर जोर देने वाले शब्दों का ढेर लगा देते थे। और वे कहते थे, हे प्रभु, ईश्वर के रचयिता, ब्रह्मांड के प्रभु, ये सभी सत्य हैं, और जो दूसरे भाग में आने वाले हैं।

लेकिन वे कभी भी इस तरह के परिचित शब्द का इस्तेमाल नहीं करेंगे। हमें एक साहस, एक दुस्साहस दिया गया है, जिसके बारे में एक लेखक बात करता है। हमारी प्रार्थनाएँ बस दुस्साहसपूर्ण हैं, कि हम सुनकर, पानी वाले समुद्र में चलने की हिम्मत करें, या प्रकाशितवाक्य में जो भी शब्द है, और राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु के पास जाने और उनकी गोद में चढ़ने में सक्षम हों।

और उसे पिता कहो। तो, इसमें एक साहस और दुस्साहस है। यही हमारी प्रार्थना का हिस्सा होना चाहिए।

और अगर वह हमारा पिता है, तो हम उसके बच्चे हैं। और इसलिए, जब हम अपना पिता कहते हैं, तो हम जो कर रहे हैं वह यह है कि हम ईश्वर के बारे में कुछ समझते हैं, और यह हमारे बारे में कुछ समझ को भी दर्शाता है, है न? कि वह हमारा पिता है, हम उसके बच्चे हैं, हम उसके बेटे या बेटी हैं। और ठीक वैसे ही, जैसा कि आप जानते हैं, स्पष्ट उपदेश उदाहरण एक छोटा बच्चा है जो दौड़ता है और कहता है, डैडी, डैडी, किट्टी, क्या आप मुझे एक मस्टैंग खरीद कर देंगे? आप जानते हैं, मेरा मतलब है, बच्चे दुस्साहसी चीजें मांगते हैं, है न? वे बस, ठीक है, आप उनके पिता हैं।

क्यों न आपसे दुनिया की सारी चीजें माँगी जाएँ? आप पिता हैं। आप माँ हैं। मुझे छोटे बच्चों को बेबाक ज़िंदगी जीते देखना बहुत पसंद है।

हम चीन में थे, और वहाँ एक आठ साल का बच्चा था जो एक साल से अमेरिका में रह रहा था, इसलिए मैंने सोचा कि मुझे अनुवादक से बात करनी चाहिए। और अनुवादक ने कहा, नहीं, नहीं, उसकी अंग्रेजी बहुत अच्छी है। अंग्रेजी बोलो।

और आप जानते हैं क्या? वह बिना किसी उच्चारण के अंग्रेजी बोलता था। और मैंने कहा, मुझे अभी भी सीखने में परेशानी हो रही है, धन्यवाद, शी, शी, शी, शी, क्योंकि एस ध्वनि वास्तव में कठिन है। और मैंने कहा, मुझे दिखाओ कि आप शी पर एस ध्वनि कैसे बनाते हैं।

और उसने अपने होठों से ऐसा किया, शी, शी। मैंने आवाज़ निकालने की कोशिश की, लेकिन वह मुझ पर हंसने लगा। उसने कहा, नहीं, नहीं, यह बिल्कुल भी सही नहीं है।

यह एक आठ साल का छोटा बच्चा है जो अतिथि वक्ता का मज़ाक उड़ा रहा है। और यह किसी मतलबीपन से नहीं किया गया था। बात सिर्फ़ इतनी थी कि वह एक बच्चा था।

वह बेहिचक है। और इस छोटे बच्चे की तस्वीर में कुछ ऐसा है जो मुझ पर हंस रहा है क्योंकि मैं चीनी एस ध्वनि ठीक से नहीं बोल पा रहा हूँ। और इसमें कुछ ऐसा है जो हमें याद दिलाता है कि हम भगवान से कैसे प्रार्थना करते हैं।

बचपन में, मैं बहुत ही साहसी प्रार्थनाएँ करता था। मैं बाइबल संबंधी प्रशिक्षण के लिए परमेश्वर से बहुत ही साहसी प्रार्थनाएँ करता हूँ। मैं आम तौर पर लोगों को यह भी नहीं बताता कि वे क्या हैं, क्योंकि वे बस, इतनी भी पागलपन भरी प्रार्थनाएँ नहीं हैं।

लेकिन मुझे लगता है कि मुझे उन्हें प्रार्थना करनी चाहिए, इसलिए मैं करता हूँ। वे साहसी प्रार्थनाएँ हैं, केवल ऐसी बातें जो एक छोटा बच्चा अपने पिता से कहने की हिम्मत करेगा। लेकिन फिर यह तुरंत संतुलित हो जाता है।

यह हमारे स्वर्गीय पिता हैं। हम बॉब माउंट्स से प्रार्थना नहीं कर रहे हैं। यह हमारे स्वर्गीय पिता हैं।

स्वर्गीय उत्कृष्टता पर जोर देता है। कि वह सृष्टि से बहुत ऊपर है। कि वह सृष्टि से महान है।

वह सृष्टि से स्वतंत्र है; वह उससे बाहर है। और इसलिए, ये सभी शब्द थे जो यहूदियों के लिए उपयुक्त थे।

आप जानते हैं, आपकी महिमा, आपकी महिमा, आपकी शक्ति। और पुराने नियम में कुछ अद्भुत प्रार्थनाएँ हैं जो वास्तव में इस पर ज़ोर देती हैं। आप जानते हैं, हम एक ऐसे ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं जो सर्वज्ञ है।

यही तो संदर्भ की बात है, है न? वह सब कुछ जानता है। हमारे पूछने से पहले ही वह सब कुछ जानता है। इसलिए, मैं पूछता हूँ क्योंकि हमें ऐसा करने के लिए कहा गया है।

स्टॉट का कहना है कि पूछना ईश्वर पर हमारी निर्भरता और भरोसे की अभिव्यक्ति है। हमें वही मांगना चाहिए जो वह पहले से ही जानता है, ठीक उसी तरह जैसे हम अपने बच्चों से मांगते हैं, है न? अगर आपका बच्चा कुछ चाहता है या उसे किसी चीज़ की ज़रूरत है, तो हम उसे ऐसा करने देते हैं, है न? कम से कम मैंने तो ऐसा किया। हम जानते हैं कि उन्हें क्या चाहिए।

उन्हें पूछना चाहिए। क्यों? क्योंकि यह उनके लिए अच्छा है। उनके लिए यह अच्छा है कि वे आकर अपनी निर्भरता स्वीकार करें और खुद को आपकी बुद्धिमत्ता के सामने समर्पित करें।

और, डैडी, क्या मैं बाइक ले सकता हूँ? वैसे, आप शायद अभी दोपहिया वाहन चलाने के लिए पर्याप्त बड़े नहीं हैं। लेकिन मेरे पास यह बहुत बढ़िया बड़ी ट्राइक है। डैडी, क्या मैं बाइक ले सकता हूँ? आप जानते हैं, मुझे पता है कि आप एक बाइक चाहते हैं।

गैराज में जाओ। यह वहाँ है। आप जानते हैं, मेरा मतलब है, यह वही है जो एक सर्वज्ञ ईश्वर करता है।

और हमारे लिए यह पूछना अच्छा है। वह सर्वशक्तिमान ईश्वर है। वह जो चाहे कर सकता है।

और इसलिए, हम साहस और आत्मविश्वास और पूरी हिम्मत के साथ प्रार्थना करते हैं। दुर्भाग्य से, जिस भगवान से हम कभी-कभी प्रार्थना करते हैं, वह शायद ही कभी किसी को आश्चर्यचकित करता है। फिर से, यह मेरा डर है।

यह मेरी उलझन है, जब मैं चर्च में जाता हूँ, और वहाँ स्वर्ग में हमारे पिता नहीं होते। कुछ चर्च वास्तव में अच्छे हैं, अरे, वह हमारा दोस्त है, आप जानते हैं, उसके चारों ओर एक हाथ रखना, उसके साथ एक तस्वीर लेना, भगवान की सेल्फी लेना, आप जानते हैं, इस तरह की चीजें। और ऐतिहासिक रूप से, चर्च पारलौकिकता में बहुत अच्छा रहा है, है ना? हममें से अधिकांश शायद बड़े लोग थे और शायद उन चर्चों में पले-बढ़े थे, जिनके बारे में पारलौकिकता की भावना थी।

मेरा मतलब है, आखिरी बार आप कब किसी चर्च में गए थे जहाँ कहा गया था, शांत रहो और जानो कि मैं ईश्वर हूँ? मेरा मतलब है, जब मैं बच्चा था तो मैं हमेशा ऐसा करता था। और मुझे हमेशा लगता था कि यह एक तरह की घुटन है। लेकिन मैं समझता हूँ कि मैं जो करने की कोशिश कर रहा था वह यह है कि हम सामूहिक रूप से आ रहे हैं, और एक साथ, हम ईश्वर के सिंहासन कक्ष में पूजा करने जा रहे हैं।

और एक तरह की आत्मीयता की भावना होती है। लेकिन साथ ही इस बात की भी आवश्यकता होती है कि ईश्वर कौन है, इस बारे में एक तरह की पारलौकिकता, आश्चर्य और विस्मय की भावना हो। और जैसा कि रॉबर्ट और मैं एक चर्च की तलाश जारी रखते हैं, मैं बस यही कहता हूँ, अगर मुझे एक ऐसा चर्च मिल जाए जो ईश्वर की पारलौकिकता को समझता हो, तो मैं बुरे उपदेशों को भी बर्दाश्त कर लूँगा।

मैं बस इतना चाहता हूँ और मुझे याद दिलाना चाहता हूँ कि भगवान मुझसे बड़े हैं; वह मेरी समस्याओं से भी बड़े हैं। मैं पाँच साल बाद भी देख रहा हूँ। हाँ।

हाँ. हाँ. ठीक है.

हाँ, यह एक कठिन संतुलन है, हालाँकि, चर्च में ऐसा नहीं है? मैं एक बार एक बुजुर्ग के साथ बहुत मुश्किल बातचीत कर रहा था जो सचमुच एक कमरे में खड़ा था और दूसरे कमरे में बच्चों को भागना बंद करने के लिए अपने गले की पूरी ताकत से चिल्ला रहा था। और मैं उसके पास गया, और मैंने कहा, चुप रहो। मैंने कहा, क्या आप बच्चों को इधर-उधर भागने से निपटने का कोई और तरीका नहीं खोज सकते? नहीं, वे बुजुर्गों से टकराएंगे और उन्हें चोट पहुँचाएँगे।

मैंने कहा, सच में, और इससे निपटने का तुम्हारा एकमात्र तरीका दूसरे कमरे से अपने गले की पूरी ताकत से चिल्लाना है? और वहाँ से रिश्ता खराब हो गया। हाँ, तुम्हें बच्चों के भागने और लोगों को चोट पहुँचाने से सावधान रहना होगा। लेकिन साथ ही, पिता की पूजा कहाँ है? तुम्हें पता है, मैं बच्चों से कहता था, मैंने कहा, अरे, तुम्हें पता है कि क्या वास्तव में मजेदार है कुर्सियों की लगभग पाँच पंक्तियों पर कूदना।

मैं चर्च के बाद प्रतियोगिताएं आयोजित करता था। तो, मैंने पूछा, तुम कितनी कुर्सियों पर कूद सकते हो? और बच्चे मेरी तरफ देखते और कहते, भगवान, ये नरम कुर्सियाँ हैं। अगर ये टूट जाएँगी, तो मैं दूसरी खरीद लूँगा।

जाओ! और हम इन बच्चों को पूजा केंद्र में कुर्सियों पर कूदते हुए देखेंगे। सेवा के दौरान नहीं। मैं नहीं चाहता था कि वे चर्च से डरें।

मैं नहीं चाहता था कि वे चर्च को एक उबाऊ जगह समझें। मैं गलियारों में बच्चों की दौड़ आयोजित करता था। मैंने कहा, अरे, अंत में चीनी कुकीज़ हैं।

जाओ! तुम्हें पता है, यह हमारा पिता है। तुम्हें ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन यह स्वर्ग में हमारा पिता है। पहुँच, निकटता, पोषण, और विस्मयकारी, पारलौकिक महिमा और शक्ति।

और मुझे लगता है कि यही चर्च की चुनौती है। आप रविवार की सुबह चर्च कैसे जाते हैं? आप इन दोनों को वहाँ कैसे लाते हैं? खैर, ठीक है।

तो, आप अपने आप को, हमारे स्वर्गीय पिता को, उन्मुख करें, और फिर हम ईश्वर से कार्य करने के लिए कहते हैं। यह, मुझे लगता है कि अगर मैं कह सकता हूँ तो एक बात है जो मैं आपको बताना चाहता हूँ। आप लोग शायद यह जानते हों, लेकिन मुझे लगता है कि यह एक ऐसी बात है जिसे वास्तव में लोगों तक पहुँचाने की ज़रूरत है।

क्या यह कि प्रभु की प्रार्थना में सभी क्रियाएँ... वे सभी अनिवार्य क्रियाएँ हैं। उनमें से हर एक। वे सभी अनिवार्य क्रियाएँ हैं।

वे आदेश हैं। अब, हमारे पास एक अलग श्रेणी है जिसे विनती की आज्ञा कहा जाता है क्योंकि आप भगवान को यह नहीं बताते कि उन्हें क्या करना है।

लेकिन क्रियाओं के व्याकरणिक रूप सभी आज्ञाकारी हैं। इसका मतलब यह है कि प्रभु की प्रार्थना में, हम ईश्वर से कार्य करने के लिए कह रहे हैं। और मुझे नहीं लगता कि लोगों को पता है कि वे ईश्वर से कार्य करने के लिए कह रहे हैं।

और मुझे लगता है कि अगर वे वाकई जानते होते कि शब्दों का क्या मतलब है, तो शायद वे प्रार्थना नहीं करते क्योंकि यह एक डरावनी प्रार्थना है। लेकिन सात अनिवार्य बातें हैं। एनएलटी थोड़ा और करीब आता है।

उदाहरण के लिए, आपका नाम सम्मानित हो। चलो एक अच्छा अंग्रेजी शब्द नहीं है, सिर्फ साहित्यिक शैली के संदर्भ में। मैं आपको पाने की कोशिश करता हूँ। आपका राज्य आए, और आपकी इच्छा पूरी हो।

लेकिन उस पर वोट नहीं दिया गया। ESV फुटनोट्स में कुछ इसी तरह की बातें हैं। लेकिन इसे अंग्रेजी में समझाना मुश्किल है।

एकमात्र चर्च जो मैंने कभी देखा है वह पार्क स्ट्रीट में गॉर्डन ह्यूजेनबर्गर का चर्च है। क्या मैंने सही कहा, मैट? ठीक है, बोस्टन में पार्क स्ट्रीट। क्या यह उसका अनुवाद है? मैं मान रहा हूँ कि यह... हाँ, मुझे पूरा यकीन है कि यह उसका अनुवाद है।

और यह इतना अलग है कि वे इसे बुलेटिन में लिखते हैं। क्योंकि कोई भी आगंतुक इसे सही नहीं समझ सकता क्योंकि यह गॉर्डन का अनुवाद है, लेकिन यह सही ढंग से जोर देता है, जैसा कि मुझे याद है, कि ये सभी क्रियाएँ आज्ञाकारिता हैं।

हम ईश्वर से कार्य करने के लिए कह रहे हैं। तो, हम क्या कर रहे हैं? सबसे पहले, हम कहते हैं, आपका नाम पवित्र माना जाए - यह पूरे बाइबल में सबसे खराब अनुवाद है।

इससे बुरा कुछ नहीं है। यह तो अनुवाद का 101वाँ रूप है। अनुवाद के 101वें रूप में आप ऐसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं जिनका कुछ मतलब होता है।

कोई नहीं जानता कि पवित्र का क्या मतलब है। यह पवित्र भूमि है। हाँ, यह पवित्र भूमि है।

हमारे चर्च में कोई भी नहीं जानता कि इसका क्या मतलब है। ठीक है, शायद कुछ लोग होंगे... शायद काफी बुजुर्ग लोग जिन्हें शायद इसका मतलब पता हो। और हमारे पास ESV पर यह बहस थी और लोग... नहीं, हर कोई जानता है कि पवित्र का क्या मतलब है।

नहीं, कोई नहीं जानता कि पवित्र का क्या मतलब है। और मैंने ESV के बाद पिछले 10 सालों में सैकड़ों-सैकड़ों लोगों से पूछा है।

और एक व्यक्ति जानता है कि पवित्र का क्या मतलब है। आप लोग अपवाद हैं। आपकी गिनती नहीं होती।

लोग नहीं जानते कि यह शब्द क्या है... तो फिर हम इसका इस्तेमाल क्यों करते हैं? क्योंकि यह परंपरा है। यह एक बुरी परंपरा है। इसका कोई मतलब नहीं है।

लेकिन यह परंपरा है। यह एक बड़ी प्रार्थना है। हम प्रभु की प्रार्थना को बदल नहीं सकते।

आखिरकार, अगर यह यीशु के लिए काफी अच्छा था, तो यह आपके लिए भी काफी अच्छा होना चाहिए। खैर, यीशु ने पवित्र नहीं कहा। उन्होंने कहा, हागिया स्टेटा।

ठीक है, मैं बस... ठीक है, मैं अपनी टाई उतार रहा हूँ। धन्यवाद। मैं बस इसे अपने सिस्टम से बाहर निकालता हूँ, और मैं ठीक हो जाऊँगा।

पवित्र। नहीं, मुझे 40 साल से कम उम्र का कोई भी व्यक्ति नहीं मिला जो जानता हो कि पवित्र शब्द का क्या मतलब है। इसका क्या मतलब है? यह पवित्र शब्द है।

सम्मान पवित्र है। ओह हाँ, यह एक मुहावरा है जिसे एपिस्कोपेलियन के अलावा हर कोई जानता है।

अब, मेरा मतलब है, आपके चर्च में जो लोग 40 से कम उम्र के हैं, मैं कहूँगा 50 से कम उम्र के हैं, उन्हें इस शब्द का मतलब नहीं पता। वे जानते हैं कि यह प्रभु की प्रार्थना का शब्द है। वे नहीं जानते कि इसका क्या मतलब है, इसलिए वे इसे बिना सोचे-समझे दोहराते हैं।

हम्म। क्या यही वह बात नहीं है जिससे हम दूर होने की कोशिश कर रहे हैं? इसीलिए मैं इस लड़ाई को इतनी जोरदार तरीके से लड़ता हूँ। एनआईवी क्या कहता है? हम इस पर फिर से एनआईवी पर चर्चा करेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है।

खैर, ठीक है। आपका नाम पवित्र हो। आपका नाम क्या है? नाम ही व्यक्ति है।

नाम से तात्पर्य उस व्यक्ति की हर चीज़ से है। इसलिए, भगवान का नाम उन सभी चीज़ों का संदर्भ है जो भगवान हैं। जो कुछ भी है... हाँ, सर।

हम पवित्र शब्द पर अटक गए। मैं वोट हार गया। मैं मई या लेट का उपयोग करूँगा।

और मैं कहूँगा, आपका नाम पवित्र माना जाए। फिर से, let नहीं है... मुझे नहीं पता कि हमारे निवासी अंग्रेज व्यक्ति let शब्द के बारे में क्या सोचते हैं। अधिकांश... Allow, लेकिन यह अंग्रेजी में एक अच्छा शब्द नहीं है।

यह कोई... यह एक भद्दा शब्द नहीं है। हाँ, यह बस... हाँ, वहाँ बस... हाँ, जी, शायद हम इसे होने देंगे। लेकिन आपका नाम पवित्र माना जाए।

मई बेहतर है। मई बेहतर है। और इसलिए आपको प्रभु की पूरी प्रार्थना को इस प्रारूप में बदलना होगा, जिसके मैं पक्ष में हूँ।

लेकिन यह... नाम ही वह सब कुछ है जो व्यक्ति है। परमेश्वर, उसके चरित्र, उसकी गतिविधियों, उसके गुणों के बारे में जो कुछ भी सच है, वही उसका नाम है। यह वैसा ही है जैसा यीशु ने यूहन्ना 17, 26 में कहा है।

मैं उन्हें आपका नाम बता सकता हूँ। खैर, वह जो कह रहा है वह यह है कि मैं... ताकि यीशु शिष्यों को परमेश्वर पिता के बारे में सब कुछ बता सके। मैं जान सकता हूँ... तो, नाम ही सब कुछ है।

और इसलिए पवित्र एक क्रिया है जिसका अर्थ है पवित्र बनाना, पवित्र करना, पवित्र के रूप में व्यवहार करना। दूसरे शब्दों में, प्रार्थना है, कि आपके साथ साधारण, आम, रोज़मर्रा या पंथिक भाषाओं में अपवित्र जैसा व्यवहार न किया जाए। सही है? पवित्र है, और अपवित्र है।

ये दो क्षेत्र वास्तविकता को विभाजित करते हैं। आपके नाम को पवित्र माना जाए। आपके नाम को आदर के साथ माना जाए।

एनएलटी कहता है, आपके नाम का सम्मान किया जाए। ईएसवी में फुटनोट कहता है कि आपके नाम को सम्मान के साथ माना जाए। और वह फुटनोट मुख्य रूप से इसलिए है क्योंकि मैं इसे जाने नहीं दूंगा।

और समिति में ऐसे लोग भी थे जो इसे अनुवाद में शामिल करने के लिए तैयार नहीं थे क्योंकि यह बहुत अलग था। लेकिन एक-दो को छोड़कर सभी ने समझा कि हमें कम से कम फुटनोट में कुछ तो डालना ही था। वैसे, बाइबल के अलावा, अनुवादक फुटनोट से नफ़रत करते हैं।

मेरा मतलब है, वे बस, जुनून के साथ, फुटनोट से नफ़रत करते हैं। क्योंकि फुटनोट का मतलब है कि हम किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकते। मूल रूप से फुटनोट यही है।

और इसलिए, जब आप NIV, ESV, NASB में कोई फुटनोट देखते हैं, खास तौर पर वे तीन, तो वे बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। ठीक है? उनमें से बहुत से इसलिए हैं क्योंकि वे किंग जेम्स से अलग हैं, और उन्हें वहाँ फुटनोट डालने की ज़रूरत है ताकि परंपरा से परिचित लोग देख सकें कि क्या हो रहा है। और अन्य फुटनोट आम तौर पर इसलिए हैं क्योंकि समिति बहुत विभाजित थी।

मेरा मतलब है, NIV में बदलाव लाने के लिए अब एक सुपरमैजोरिटी की ज़रूरत है, मुझे लगता है कि यह 70% है। फुटनोट बनाने के लिए थोड़ा कम बहुमत की ज़रूरत है। लेकिन NIV में बदलाव लाने के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है।

और इसलिए कभी-कभी ऐसा कुछ होता है जो हम वाकई चाहते हैं, हमें 70 नहीं मिल पाता, और इसलिए हम विनती करते हैं, क्या हम कृपया इसे फुटनोट में डाल सकते हैं? और अगर गलतफहमी या ऐसा कुछ होने की संभावना है, तो यह आम तौर पर वहाँ जाता है। लेकिन अनुवादकों को वास्तव में फुटनोट पसंद नहीं होते, एक सामान्य नियम के रूप में। इसलिए जब वे सामने आएँ तो उन पर ध्यान दें।

तो, ESV फुटनोट बहुत महत्वपूर्ण है। मुझे लगता है कि आपने एक बात कही है कि एक अनिवार्यता है। क्या कोई सक्रिय अनिवार्यता है? नहीं, वहाँ हैं... नहीं, वे सक्रिय हैं।

वे सभी सक्रिय अनिवार्यताएँ हैं। यही कारण है कि चीजों का सामान्य क्रम, आप सामान्य क्रम में सटीक अनुवाद नहीं पा सकते हैं। खैर, वहाँ है... एक मिनट रुको, मुझे खेद है।

अलथेटो सक्रिय है। नहीं, नहीं, वे एक मिश्रण हैं। मुझे खेद है, वे एक मिश्रण हैं।

डॉस सक्रिय है। चेहरा सक्रिय है। मैं बस अपनी ग्रीक भाषा की दोबारा जांच करने जा रहा हूँ।

ओह, शूट, यह दुर्घटनाग्रस्त हो गया। मैट, क्या यह एक... अलथेटो, यह एक... ओह, शायद यह एक डेपोनेंट क्रिया है। यह मज़ेदार है, मुझे यह पता होना चाहिए।

मुझे खेद है। मैं अपना ग्रीक टेक्स्ट वापस लाने की कोशिश कर रहा हूँ। यह चला गया।

खैर, पवित्रता में है... मैं पवित्रता को प्राथमिकता दूंगा... मैं मोमबत्तियाँ बनाने से ज़्यादा कुछ भी पसंद करूँगा। क्योंकि पवित्रता के साथ मैं सिर्फ़ यही सुनता हूँ... यह हागियादज़ो से पेरिस है। ठीक है, तो यह एक निष्क्रिय है।

वह एक निष्क्रिय है। लेकिन अन्य... आपका राज्य आना सक्रिय है। आपकी इच्छा पूरी हो यह निष्क्रिय है।

इस दिन देना सक्रिय है। माफ़ करना सक्रिय है। और हमें नेतृत्व न करना एक वायु उपवाक्य है, लेकिन इसे एक सक्रिय शक्ति होना चाहिए।

विचार यह है कि... आपको क्यों बनाया या नेतृत्व किया जाएगा? यह महत्वपूर्ण है। एक सक्रिय चरित्र... क्योंकि अपने नाम को पवित्र बनाओ। अपने नाम को पवित्र बनाओ।

तुम ऐसा करो। यही हम कह रहे हैं। अपना नाम पवित्र बनाओ।

ठीक है। मुझे इसे स्पष्ट करने दें। आप देखेंगे कि निष्क्रिय आदेश के रूप में यह क्यों समझ में आता है।

आप जो हैं, उसके लिए जाने जाएँ। हमारी प्रार्थना है कि परमेश्वर ऐसा कार्य करे कि वह जो है, वह दिखाई दे। कि उसे पवित्र माना जाए और उसके साथ पवित्र व्यवहार किया जाए।

ठीक है, तो सवाल यह है। यह कैसे होता है? अगर हम परमेश्वर को पुकारें, इस तरह से काम करें कि हम पवित्र दिखें। वह ऐसा कैसे करता है? प्रार्थना का जीवन।

यही कारण है कि लोगों के लिए प्रभु की प्रार्थना करना खतरनाक है। क्योंकि जब हम कहते हैं, आपका नाम पवित्र माना जाए। आपका नाम श्रद्धा और पवित्रता के साथ माना जाए।

इसकी शुरुआत मुझसे होती है। और इसलिए, हम प्रार्थना कर रहे हैं कि हे ईश्वर, कृपया मेरे माध्यम से आगे बढ़ो। कृपया मेरे भीतर कार्य करो।

इसमें, मैं जो शब्द इस्तेमाल करता हूँ और जो जीवन जीता हूँ, वह परमेश्वर की पवित्रता और पूर्णता की सटीक घोषणा है। अब, लोगों को पता ही नहीं है कि वे यही प्रार्थना कर रहे हैं। मुझे नहीं लगता।

इसलिए, मेरे अंदर और मेरे माध्यम से अपने नाम को पवित्र घोषित करने के लिए काम करें। और फिर जब हम एक समुदाय के रूप में ऐसा करते हैं, तो हमारे पिता, हम जो कह रहे हैं, भगवान, गतिविधियाँ और दृष्टिकोण और प्रेम और सभी चीजें जो चर्च में उचित सामुदायिक जीवन बनाती हैं, इस चर्च का जीवन आपकी पवित्रता और आपकी श्रद्धा और आपकी पवित्रता की घोषणा हो। अगर हमारे चर्च ऐसे होते तो यह कैसा होता? खैर, यह स्वर्ग होगा।

यह स्वर्ग तक नहीं होने वाला है। यह सामुदायिक प्रार्थना की समस्या है, जिसमें ईश्वर व्यक्तियों के माध्यम से और सामूहिक रूप से चर्च के माध्यम से आगे बढ़ता है, ताकि ईश्वर की पवित्रता और पूर्णता की घोषणा की जा सके, और फिर हम चुगली करते हैं, हम एक दूसरे पर वार करते हैं, हम गपशप करते हैं, हम निंदा करते हैं, हम कमतर आंकते हैं, हम काटते हैं। हम क्रूर हैं।

यह दुनिया को भगवान के बारे में क्या बता रहा है? ठीक है? मेरा एक दोस्त था जो करीब एक साल से चर्च में था, और उसने कहा, तुम्हें पता है, मैं तुम्हें यह बताने का इंतज़ार कर रहा था कि मैं इस चर्च में क्यों नहीं आया। मैंने कहा, और हम बहुत अच्छे दोस्त बन गए हैं, और उसने कहा, मैं तुम्हें अब बताना चाहता हूँ। मैंने कहा, मुझे नहीं पता था कि जब तुम आए थे तो तुम जाने के बारे में सोच रहे थे, लेकिन ठीक है।

उन्होंने कहा कि मैं संडे स्कूल जाता था। हमारे पास अभी भी संडे स्कूल था। प्रशांत नॉर्थवेस्ट में यह बहुत दुर्लभ बात है, लेकिन हमने इसे किया।

मुझे लगा कि मध्य-प्रवेश स्तर का होना महत्वपूर्ण है। आप किसी आगंतुक को लेकर यह नहीं कह सकते कि, अरे, क्या आप इस चर्च के समुदाय में शामिल होना चाहते हैं? एक छोटे समूह में शामिल हो जाइए। यह काम नहीं करता।

हमें मध्य-स्तरीय प्रवेश बिंदुओं की आवश्यकता थी। इसलिए, पूजा केंद्र बड़ा प्रवेश बिंदु था। वैसे भी, रविवार स्कूल मध्य स्तर के थे।

तो, मैं रविवार स्कूल गया, और मैं बैठ गया। वहाँ दो महिलाएँ थीं जो संयोग से मेरे सामने बैठी थीं, और वे किसी से झूठ बोल रही थीं। वे बस चुगली कर रही थीं, चाकू मार रही थीं, हत्या कर रही थीं, और उस व्यक्ति के चरित्र पर हमला कर रही थीं। उसने कहा, यह बहुत घिनौना था।

और उसने कहा, मैंने अपनी पत्नी की ओर देखा, और मैंने कहा, हमें इस चर्च को छोड़ने की आवश्यकता हो सकती है। तभी, एक बुजुर्ग अपनी पत्नी के बगल में बैठ गया और उसके चारों ओर अपना हाथ डाल दिया। और उन्होंने एक-दूसरे को देखा और कहा, हे भगवान।

वह एक बुजुर्ग की पत्नी हैं। और मैं बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने तुरंत ही हमारे साथ रहने का फ़ैसला किया और मैं उन्हें जान पाया। वे यहीं रहीं और वे बहुत अच्छी संपत्ति और अच्छे दोस्त थे।

लेकिन मैंने सोचा, आप जानते हैं क्या? वे दो महिलाएँ अपने पीछे बैठे आंगंतुकों को बता रही थीं कि उनके अनुसार ईश्वर कौन है। मैं जो करती हूँ और जिस तरह से रहती हूँ और जो कहती हूँ, उसके ज़रिए आपका नाम पवित्र माना जाए। यह चर्च जो कहता है और हम जिस तरह से व्यवहार करते हैं, हम एक-दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करते हैं और हम एक-दूसरे से कैसे प्यार करते हैं, उसके ज़रिए आपका नाम सामुदायिक रूप से पवित्र माना जाए।

इसलिए आपको प्रभु की प्रार्थना करते समय बहुत सावधान रहना चाहिए। वैसे, यह दिलचस्प है कि यह श्लोक 10 के अंत तक जाता है, धरती पर भी, जैसा कि स्वर्ग में है। ग्रीक में, यदि आपके पास एक श्रृंखला है और फिर आप एक संशोधक जोड़ना चाहते हैं जो पूरी श्रृंखला को प्रभावित करता है, तो आप इसे अंत में रखते हैं।

इसलिए, अंग्रेजी में, हम अंग्रेजी में अपनी सोच में इतने अनुक्रमिक हैं कि स्वाभाविक रूप से यह कहा जाता है कि पृथ्वी पर आपके साथ वैसा ही व्यवहार किया जाएगा जैसा स्वर्ग में किया जाता है। लेकिन वास्तव में, पृथ्वी पर जैसा स्वर्ग में किया जाता है, यह बहुत आसानी से, और मुझे लगता है कि सबसे अधिक संभावना है, तीनों पूर्ववर्ती अनिवार्यताओं पर लागू होता है। इसलिए आपका नाम पृथ्वी पर पवित्र माना जाए जैसा कि स्वर्ग में माना जाता है।

जैसे तुम्हारा राज्य स्वर्ग में आया है वैसे ही तुम्हारा राज्य पृथ्वी पर भी आए। और जैसे तुम्हारी इच्छा स्वर्ग में पूरी होती है वैसे ही तुम्हारी इच्छा पृथ्वी पर भी पूरी हो। तो, यह एक व्याख्यात्मक निर्णय है, लेकिन मुझे लगता है कि शायद यही सही है।

तो आप सोचिए, स्वर्ग में परमेश्वर को कैसे पवित्र माना जाता है? स्वर्ग में उसके साथ कैसा आदरपूर्ण व्यवहार किया जाता है? मैं कहूँगा कि बिल्कुल सही, है न? स्वर्गदूत, संत, वे ठीक से जानते हैं कि वह कौन है क्योंकि वे उसकी प्रत्यक्ष उपस्थिति में रहते हैं, लेकिन पाप के बिना। और इसलिए जब वे स्वर्ग में अपना जीवन जीते हुए उसके बारे में बात करते हैं, तो यह पूरी तरह से किया जाता है, अपने पिता परमेश्वर के प्रति पूर्ण आदर और पूर्ण पहुँच के साथ। जिस तरह स्वर्ग में आपके साथ आदरपूर्ण व्यवहार किया जाता है, उसी तरह पृथ्वी पर भी आपके साथ आदरपूर्ण व्यवहार किया जाए।

और फिर, कृपया, अमेरिकी चर्च में कोई इसे समझे। उबाऊ और घमंडी बने बिना, कृपया, कोई इसे समझे। यही कारण है कि मेरी बेटी एपिस्कोपेलियन सेवाओं और कभी-कभी कैथोलिक मास में जाती है।

वह मास में भाग नहीं लेती, लेकिन वह कहती है, पिताजी, मुझे समय-समय पर ऐसे लोगों के समूह के साथ रहने की ज़रूरत है जो पारलौकिकता को समझते हैं। वह धर्मशास्त्र में अच्छी तरह प्रशिक्षित है। पारलौकिकता और ईश्वर की महिमा और उसकी शक्ति और उसकी शक्ति और उसकी पूर्णता को समझने के लिए।

और मुझे यह समझ में नहीं आता जब हर कोई एक दूसरे पर कॉफ़ी गिरा रहा हो, हँस रहा हो, बातें कर रहा हो और संदेश भेज रहा हो जबकि उपदेशक उपदेश दे रहा हो। मैं ऐसा नहीं कर सकता। मुझे कुछ और चाहिए।

तो, वह वास्तव में कई वर्षों तक कैथोलिक चर्च में गई थी। मुझे लगता है कि यह लैटिन था। मुझे यकीन नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि यह लैटिन था।

वह चर्च की उस गंदगी से दूर जाना चाहती थी जिसमें हम उलझे हुए थे, और उसे बस भगवान में आराम करने की ज़रूरत थी। और उसे यह जानने की ज़रूरत नहीं थी कि शब्दों का क्या मतलब है। उस समय यह उसके लिए महत्वपूर्ण नहीं था।

आपका नाम पवित्र माना जाए। धरती पर भी आपके साथ वैसा ही आदर और सम्मान किया जाए जैसा स्वर्ग में किया जाता है। दूसरी अनिवार्यता।

हम अगले दो पर आँगे, और फिर रुकेंगे। आपका राज्य आए, या आपका राज्य आए। याद रखें, हमने राज्य के बारे में बात की है, है न? राज्य मुख्य रूप से कोई स्थान नहीं है।

राज्य मुख्य रूप से अपने बच्चों के दिलों और जीवन में परमेश्वर का संप्रभु शासन है। और इसलिए, परमेश्वर का राज्य वह है जब और जहाँ वह अपने बच्चों के जीवन में शासन करता है। और मैं राज्य के साथ तीन समय-सीमाओं के संदर्भ में सोचना पसंद करता हूँ।

इसका एक हिस्सा अतीत की ओर देखना है क्योंकि राज्य आ चुका है। हमने इस बारे में बात की है, लेकिन राज्य आ चुका है। कूस पर परमेश्वर की जीत निश्चित थी।

परमेश्वर के राज्य का आगमन वर्तमान को देखता है। वह अभी मेरे जीवन में किस तरह शासन और राज कर रहा है? और वह मेरे प्रभाव क्षेत्र में आने वाले लोगों के जीवन पर किस तरह शासन और राज कर रहा है? मैं परमेश्वर के राज्य को उस वर्तमान स्थिति में जड़ पकड़ते और बढ़ते हुए देखता हूँ। और मैं मसीह की वापसी की पूर्णता के भविष्य की ओर देखता हूँ जब परमेश्वर का राज्य अपनी पूर्णता में आएगा।

और इसलिए जब हम प्रार्थना करते हैं, तो आपका राज्य पृथ्वी पर आए जैसा कि आपका राज्य स्वर्ग में आया है। फिर से, यह कहाँ से शुरू होता है? वही उत्तर, है न? इसलिए, जब हमारे लोग यह प्रार्थना करते हैं, तो हम जो कह रहे हैं, वह यह है कि, भगवान, आपका राजसी, संप्रभु, दिव्य शासन मेरे जीवन में यहाँ और अभी पूरी तरह से व्याप्त हो जैसा कि यह स्वर्ग में स्वर्गदूतों और संतों के दिलों और जीवन में व्याप्त है। आपका राजसी शासन मेरे माध्यम से मेरे प्रभाव क्षेत्र में आने वाले लोगों तक फैल सकता है।

आपका राज्य स्थानिक रूप से फैल जाए, जैसे कि अधिक से अधिक लोग आपको राजा के रूप में जानने लगें। आपका राज्य आए। फिर से, लोग नहीं जानते कि वे यह प्रार्थना कर रहे हैं।

जैसे आपकी इच्छा स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे ही पृथ्वी पर भी आपकी इच्छा पूरी हो। ईश्वर की इच्छा क्या है? बढ़िया सवाल। मैंने हमेशा कहा है कि मैं युवा समूहों में कभी ज्यादा नहीं बोलता, यहाँ तक कि जब मैं कॉलेज में प्रोफेसर था, तब भी नहीं, लेकिन ऐसा लगता है कि युवा समूहों के पास सिर्फ़ दो सवाल थे।

आपको बस उन दो सवालों के अच्छे जवाब देने थे, और आप एक प्रमुख हाई स्कूल वक्ता बन सकते थे। सवाल हैं, मेरे जीवन के लिए भगवान की इच्छा क्या है, और क्या मैं अपने प्रेमी के साथ सो सकती हूँ? है न? ये वास्तव में युवा समूहों से सुनने वाले एकमात्र दो सवाल हैं। दूसरे का उत्तर देना बहुत आसान था।

नहीं। आपको क्यों लगता है कि यह ठीक है? लेकिन सवाल यह है कि परमेश्वर की इच्छा क्या है? हम प्रार्थना करते हैं, आपकी इच्छा पूरी हो। खैर, आपकी इच्छा क्या है? और मैं हमेशा 1 थिस्सलुनीकियों 4:3 पर जाऊंगा। यह परमेश्वर की इच्छा है, आपका पवित्रीकरण।

और फिर मैं कहूँगा, उसके बाद, जो चाहो करो। मैं भगवान की इच्छा पर पूरी तरह से स्थिर नहीं हूँ। मैं वॉकी के बहुत करीब हूँ।

मुझे लगता है कि परमेश्वर के पास कुछ खास लोगों के जीवन के लिए कुछ खास बुलावे हैं। लेकिन निश्चित रूप से, हमारे जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा का बड़ा हिस्सा हमारा पवित्रीकरण है। ये कलीसियाओं के लिए पौलुस की प्रार्थनाएँ हैं।

वह चाहता है कि हम बड़े हों। वह चाहता है कि हम परिपक्वता की ओर बढ़ें। हर परिस्थिति में धन्यवाद दें।

यही परमेश्वर की इच्छा है। दुख के बीच में भी भलाई करो। यही परमेश्वर की इच्छा है, 1 पतरस 2। तुम परमेश्वर की इच्छा को हृदय से करो, इफिसियों 6.6, खुशी से, सहजता से।

मेरा मतलब है, हम इन आयतों को जानते हैं। लेकिन मूल रूप से, परमेश्वर की इच्छा है कि हम बढ़ें, पवित्र बनें, हमारे चरित्र को यीशु के चरित्र के साथ संरेखित करें, जो पूरी तरह से परमेश्वर पिता के चरित्र के अनुरूप है, और फिर उस चरित्र से बाहर निकलकर, यीशु के कार्य करें, परमेश्वर के कार्य करें, चरित्र और व्यवहार करें। और इसलिए, हम कह रहे हैं, परमेश्वर, आपकी इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो।

मुझसे शुरू करो। इसकी शुरुआत मुझसे हो। यह एक गीत की पंक्ति है।

और इसकी शुरुआत मुझसे हो। मुझे हर चीज़ एक गाने की याद दिलाती है। मुझे माफ़ करना।

ठीक है, और धरती पर शांति हो, और इसकी शुरुआत मुझसे हो। ठीक है, तो हम शांति को निकाल देंगे और इच्छाशक्ति डाल देंगे। और ईश्वर की इच्छा मुझमें पूरी हो।

आपकी वृद्धि, पवित्रता और नैतिक पूर्णता की ओर बढ़ने की इच्छा मुझमें शुरू हो। फिर, यह मेरे आस-पास के उन लोगों तक फैल जाए जिन्हें मैं प्रभावित कर सकता हूँ और जो मुझे प्रभावित कर सकते हैं। मुझे प्रकाशितवाक्य में दिए गए छोटे-छोटे अंशों को देखना अच्छा लगता है।

मुझे यह देखना अच्छा लगता है कि स्वर्ग में क्या हो रहा है क्योंकि इसी तरह से स्वर्ग में परमेश्वर की इच्छा का पालन किया जा रहा है। और, आप जानते हैं, आप देखिए, मेरी माँ की पसंदीदा कविता यह थी, यह सभी संतों की है। माँ के जीवन में बहुत दर्द है: एक भाई मर रहा है, एक बहन मर रही है, बस बहुत सारी मौतें, उसका पहला पति कैसर से मर रहा है।

मेरी माँ के जीवन में बहुत दर्द था। और उनकी पसंदीदा कविता प्रकाशितवाक्य की वह कविता थी जहाँ संत सिंहासन के नीचे हैं, वे चिल्ला रहे हैं, तुम्हारे सभी मार्ग पवित्र और न्यायपूर्ण हैं। और वह कहती थी, कभी-कभी, बिल, कभी-कभी, बिल, हम जानेंगे कि परमेश्वर के कार्य पवित्र और न्यायपूर्ण हैं।

इसे स्वर्ग कहा जाएगा। हम अब विश्वास के साथ मानते हैं कि किसी दिन हम संतों के साथ होंगे और पुकारेंगे, पवित्र और न्यायपूर्ण हैं आपके सभी मार्ग। यहां तक कि सभी दर्द और सभी पीड़ा और सभी असमानताओं और उन सभी चीजों के साथ भी जिनका हमें पादरी के रूप में सामना करना पड़ता है और जिनका हमें पृथ्वी पर सामना करना पड़ता है।

किसी दिन, जब हम पूरी तस्वीर देखेंगे, तो हम सभी संतों के साथ चिल्लाएँगे, तुम्हारे सारे मार्ग पवित्र और न्यायपूर्ण हैं। तो इस तरह स्वर्ग में परमेश्वर की इच्छा पूरी होती है। सहज रूप से, खुशी से, परमेश्वर क्या कर रहा है इसकी पूरी समझ के साथ।

और जिस तरह स्वर्गदूत और संत पुकारते हैं, पवित्र और न्यायी, उसी तरह अब हम भी पुकारते हैं, परमेश्वर, तेरी इच्छा मुझमें पूरी हो। मैं वैसा व्यक्ति बनूँ जैसा तू चाहता है। और फिर, यह बात इस तरह फैले कि मेरे आस-पास के लोग खुशी से, सहजता से, किसी भी तरह की परिस्थिति में पुकारें, पवित्र और न्यायी हैं तेरे सभी तरीके।

ऐसा करना अभी थोड़ा मुश्किल है, है न? हमारे पास बहुत सी चीजें हैं जो हमसे लड़ रही हैं। हमारे पास पाप है, हमारे पास दर्द है, जो न केवल एक महान शिक्षक है, बल्कि सीखने से भी बहुत बड़ी बाधा है। हमारे पास विश्वास की कमी है।

मुझे आश्चर्य है कि यह एक पंक्ति कितनी अलग होगी। आपकी इच्छा पृथ्वी पर भी पूरी हो, जैसे स्वर्ग में पूरी होती है, अगर हम वास्तव में अपने जीवन पर स्वर्ग का दृष्टिकोण रख सकें। ठीक है, यह पहला भाग है।

हम लंच के लिए थोड़ा जल्दी रुकने वाले हैं, लेकिन मैं जानना चाहता था कि क्या आपके पास कोई टिप्पणी या सवाल है। मैं काफी समय से बात कर रहा हूँ। मुझे आश्चर्य हो रहा है कि क्या आपके पास राज्य की कोई अच्छी परिभाषा नहीं है।

राज्य वह हो सकता है जहाँ परमेश्वर की इच्छा स्वर्ग में पूरी होती है। हं? यह बहुत बढ़िया है। परमेश्वर का राज्य वह है जहाँ उसकी इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो रही है, जैसे स्वर्ग में।

जब तक हम यात्रा पर हैं और इस प्रक्रिया में सीख रहे हैं और बढ़ रहे हैं। लेकिन जितनी ज़्यादा उसकी इच्छा है, जितना ज़्यादा हम अपनी इच्छा को उसके अधीन करते हैं, एक तरह से, राज्य उतना ही कम मिश्रित होता है और उसका संप्रभु शासन उतना ही ज़्यादा शक्तिशाली होता है। इसलिए, राज्य वह है जहाँ हर बढ़ते हुए माप में परमेश्वर की इच्छा पूरी हो रही है।

और यही राजसी शासन है, है न? हम अपने राजा की इच्छा के अधीन रहते हैं। और हम वही करते हैं जो वह हमें करने के लिए कहता है। आप जानते हैं, मुझे याद है कि जब हम चर्च की योजना बना रहे थे, तो हमने बाइबल अध्ययन से शुरुआत की थी।

मैंने "प्रभुत्व" शब्द का इस्तेमाल किया। मेरे बगल में बैठा आदमी सचमुच पीछे हट गया, उसका चेहरा लाल हो गया, और वह गुस्से में था। "प्रभुत्व उद्धार" के दुरुपयोग से उसका चर्च विभाजित हो गया था।

और एक पादरी आया था, और मैं प्रभुता में विश्वास करता हूँ कि उद्धार बाइबल में परिभाषित है। जो पादरी आया था, वह इसका इस्तेमाल सिर्फ लोगों को परेशान करने के लिए कर रहा था, और यह वाकई बहुत बुरा था। और इसलिए, उसके लिए प्रभुता शब्द, और मुझे लगता है कि इस तरह के मुद्दों के कारण, बहुत से लोगों के लिए संघर्षपूर्ण हो सकता है।

इसीलिए मुझे आपकी बात पसंद आई। आपको अभी भी राजसी शासन, उसकी अवधारणा मिलती है, लेकिन आपको यह भी पता चलता है कि परमेश्वर का राज्य वहाँ आता है जहाँ उसकी इच्छा पूरी होती है। और यह प्रभुतापूर्ण उद्धार के खिलाफ़ मौजूदा कलंक को दरकिनार कर देता है।

मुझे यह पसंद है। ओह, हाँ, ओह। ओह, जी।

ओह। हाँ, हाँ। तो, क्या यीशु गलत थे? ओह, लेकिन यह दूसरे व्यवस्था के रूप में हम पर लागू नहीं होता है, हाँ।

हाँ.खैर.हाँ.

हाँ। मैं दूसरी दिशा में जाऊँगा। जिसे हम चर्च कहते हैं, वह दृश्यमान चर्च राज्य नहीं है।

राज्य एक अदृश्य चर्च है। चर्च मसीह के सच्चे अनुयायी हैं, और ऐसे बहुत से लोग हैं। हाँ।

हाँ, ऐसा होना चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं है। तो, नहीं। नहीं, मैं ऐसा कभी नहीं कहूँगा।

मैं कभी भी यह नहीं मानूँगा कि किसी भी मण्डली में दृश्यमान चर्च अदृश्य चर्च है। और मुझे लगता है कि यह कभी भी ऐसी धारणा नहीं बनाना बहुत महत्वपूर्ण है। मुझे नहीं लगता कि हम में से कोई भी कभी भी यह मान सकता है कि हम जिससे बात कर रहे हैं वह मसीह का सच्चा अनुयायी है।

इसलिए, मैं यह मानना पसंद करूँगा कि कहीं न कहीं, एक दृश्यमान चर्च है जहाँ वे सभी अदृश्य चर्च के सदस्य हैं। यार, मैं वहाँ जाना पसंद करूँगा। लेकिन मैं एक पादरी के रूप में कभी नहीं मानूँगा कि ऐसा है।

लेकिन मैं आपकी कही दूसरी बात पर भी बात करना चाहता हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि यह वाकई अच्छी है। ये तीनों बातें एक-दूसरे से जुड़ी हुई नहीं हैं। और यही बात आप कहना चाह रहे हैं, डेव, है न? कि परमेश्वर के नाम का पवित्रीकरण, उसके शासन के प्रति समर्पण, और उसकी इच्छा के प्रति समर्पण, ये सभी एक-दूसरे से जटिल रूप से जुड़े हुए हैं।

आप प्रार्थना नहीं कर सकते। आपका नाम पवित्र हो। खैर, आपका नाम कैसे पवित्र होता है? आपका नाम राज्य के प्रसार और उसकी इच्छा की पूर्ति में पवित्र होता है। तो, ये तीनों बातें वास्तव में एक-दूसरे से बहुत मिलती-जुलती हैं।

आप लगभग यह कह सकते हैं कि, मेरे दिमाग से बोलते हुए, आप लगभग यह कह सकते हैं कि वे एक ही सिक्के के तीन अलग-अलग पहलू हैं। वे एक ही वास्तविकता को देख रहे हैं लेकिन अलग-अलग दृष्टिकोण से। परमेश्वर को कैसे देखा जाता है, लोग उसके शासन के प्रति कैसे समर्पित होते हैं, और लोग उसकी इच्छा को कैसे समझते हैं।

मुझे यह पसंद है। यह सोचने का बहुत मददगार तरीका है। यह सही है।

अगर ये तीनों आपस में बहुत करीब से जुड़े हुए हैं, तो निश्चित रूप से, धरती पर भी जैसा कि स्वर्ग में है, इसे उन तीनों पर लागू होना चाहिए। मैंने वास्तव में इसे पहले कभी इस तरह से नहीं कहा है, लेकिन मैं खुद को बोलते हुए सुन रहा था। मैं कहता हूँ, मुझे यह पसंद है।

आपका नाम धरती पर भी पवित्र हो जैसा कि स्वर्ग में पवित्र है। आपका राज्य धरती पर भी आए जैसा कि आपका राज्य स्वर्ग में आया है। मुझे लगता है कि आपको कहना होगा कि वह स्वर्ग में आ गया है।

और आपकी इच्छा धरती पर भी पूरी हो जैसे स्वर्ग में पूरी हो रही है। आप वास्तव में एक ग्राहक के लिए काम कर रहे हैं। उसे आपका नाम बताने के लिए, उसे यह कहने के लिए कि वह आया है, उसे यह कहने के लिए कि... हाँ।

दिलचस्प। दिलचस्प। कम शब्द, बहुत सारे अर्थ।

कम शब्द, बहुत सारे अर्थ। ठीक है, तो हम आधे रास्ते पर हैं, और हमें... मैं घंटों का ब्रेक लेने में बहुत अच्छा नहीं हूँ, मैं माफी चाहता हूँ। हमें इन लंबे व्याख्यानों को टुकड़ों में विभाजित करने के लिए बाइबिल प्रशिक्षण के तरीके खोजने होंगे, मैट।

मुझे लगता है कि हमें आखिरकार प्रोग्रामर को वह कार्यक्षमता देनी ही होगी। कंप्यूटर के सामने बैठने के लिए डेढ़ घंटा बहुत लंबा समय है। वैसे, बाइबिल प्रशिक्षण के लिए एक शानदार ऐप है।

इसलिए, अगर आपको ऐप्स पसंद हैं, तो biblicaltraining.org पर जाएं, और हम हैं।

यह डॉ. बिल मौस हैं जो माउंट पर उपदेश पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह मैथ्यू 6:1 और उसके बाद के सत्र 10, धर्मपरायणता के कार्य, प्रार्थना है।